

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/7/3 - Compartment



Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पटकथा में गाँवों की अहम् भूमिका है। बदलते समय के साथ, “डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था” एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है। यह व्यवस्था न केवल तकनीकी विकास का संकेत है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है।

डिजिटल इंडिया मिशन के तहत अब ग्राम पंचायतों में इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। किसान अब मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाएँ और बाज़ार के दाम जान सकते हैं। इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है।

ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस ने पारदर्शिता बढ़ाई है। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ अब ऑनलाइन हो गई हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अब भी हैं – जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति, फिर भी यह बदलाव धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है। यदि सही दिशा में प्रयास जारी रहे, तो डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर कर सकती है।

[10 अंक]

1(i). गद्यांश में ग्रामीण भारत के हृदय में नवीन विकास के संकेत का प्रतीक किसे कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) तकनीकी विकास की व्यवस्था
- (B) सामाजिक विकास की व्यवस्था
- (C) आर्थिक विकास की व्यवस्था
- (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

सही उत्तर: (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए गद्यांश के पहले अनुच्छेद में बदलते समय के साथ डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को एक नई दिशा का प्रतीक बताया गया है। इससे तकनीकी विकास और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण दोनों जुड़े हैं।

चरण 2: प्रासंगिक अर्थ और विकल्प जाँचिए विकल्प (A) केवल तकनीकी पक्ष, (B) केवल सामाजिक पक्ष और (C) केवल आर्थिक पक्ष तक सीमित है। इनमें से कोई अकेला उस व्यापक व्यवस्था का नाम नहीं है जिसे गद्यांश में नई दिशा का प्रतीक कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था नवीन विकास का प्रतीक है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(ii). डिजिटल व्यवस्था से किसानों को क्या लाभ हुआ है ?

[1 अंक]

- (A) कर देने में सुविधा होना
- (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना
- (C) अनाज भंडारण की सुविधा होना
- (D) मज़दूरी में वृद्धि होना

सही उत्तर: (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में किसान मोबाइल ऐप्स से मौसम, फ़सल बीमा योजनाओं और बाज़ार के दाम की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसी के बाद स्पष्ट है कि बिचौलियों पर उनकी निर्भरता कम हुई है।

चरण 2: प्रासंगिक अर्थ और विकल्प जाँचिए विकल्प (A) में कर देने की सुविधा, (C) में अनाज भंडारण और (D) में मज़दूरी में वृद्धि की बात है। किसान के लाभ के रूप में गद्यांश इनमें से किसी का उल्लेख नहीं करता। सही उत्तर पाठ में व्यक्त परिणाम पर आधारित होगा।

चरण 3: निष्कर्ष किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(iii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन I : ई-गवर्नेंस सिस्टम में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं।

कथन II : ई-गवर्नेंस सिस्टम में पारदर्शिता के कारण सरकारी जानकारी एवं सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच में वृद्धि हुई है।

कथन III : ई-गवर्नेंस सिस्टम ग्रामीण भारत को आधुनिक और सशक्त बना रहा है।

कथन IV : ई-गवर्नेंस सिस्टम समय और धन का अपव्यय करता है।

[1 अंक]

(A) केवल कथन I और IV सही हैं।

(B) केवल कथन III और IV सही हैं।

(C) केवल कथन II और III सही हैं।

(D) केवल कथन I और II सही हैं।

सही उत्तर: (C) केवल कथन II और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए कथन II समर्थित है, क्योंकि ई-गवर्नेंस से पारदर्शिता बढ़ी है और जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन तथा सब्सिडी जैसी सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन हुई हैं। कथन III भी समर्थित है, क्योंकि यह बदलाव ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है।

चरण 2: प्रासंगिक अर्थ और विकल्प जाँचिए कथन I की सुरक्षा संबंधी चिंता गद्यांश में नहीं दी गई है। पाठ में डिजिटल साक्षरता, धीमे इंटरनेट और अनियमित बिजली की चुनौतियाँ हैं। कथन IV भी समर्थित नहीं है; पाठ समय और धन का अपव्यय नहीं बताता। (A) और (B) में IV तथा (D) में I होने से वे गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन II और III सही हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(iv). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए गद्यांश डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को केवल तकनीकी विकास का संकेत नहीं मानता। इसके साथ ग्रामीण समाज का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण जोड़ा गया है। इसलिए उद्देश्य बताते समय सुविधा के किसी एक उदाहरण तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

चरण 2: पूछे गए बिंदु स्पष्ट कीजिए अंतिम वाक्य में सही दिशा में प्रयास जारी रहने पर भारत के आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर होने की बात है। इस लक्ष्य को ग्रामीण जीवन के सशक्तिकरण से जोड़कर उद्देश्य स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य तकनीक द्वारा ग्रामीण जीवन का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण करना और भारत को आत्मनिर्भर तथा समावेशी समाज की ओर बढ़ाना है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(v). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था से ग्राम पंचायतों में कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए दूसरे अनुच्छेद में डिजिटल इंडिया मिशन के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में उपलब्ध सुविधाओं की सीधी सूची दी गई है। इसमें इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ आती हैं। उत्तर में इन चारों का उल्लेख आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न ग्राम पंचायतों की सेवाएँ पूछता है।

चरण 2: पूछे गए बिंदु स्पष्ट कीजिए अगले अनुच्छेद में ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस का विस्तार दिया गया है। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ भी ऑनलाइन हो गई हैं। ये उदाहरण बताते हैं कि पंचायत स्तर पर डिजिटल परिवर्तन संचार के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन से भी जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्राम पंचायतों में इंटरनेट, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा तथा टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। साथ ही जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाओं और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ ऑनलाइन हो गई हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(vi). किसानों को डिजिटल तकनीक के तहत मोबाइल ऐप के माध्यम से किन-किन सुविधाओं की प्राप्ति हो रही है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में मोबाइल ऐप्स से किसानों को मिलने वाली सुविधाओं का उल्लेख है। किसान इनके माध्यम से मौसम की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही उन्हें फ़सल बीमा योजनाओं तथा बाज़ार के दाम की जानकारी भी मिलती है। प्रश्न में किन-किन सुविधाओं का संकेत है, इसलिए तीनों बिंदु देने चाहिए।

चरण 2: पूछे गए बिंदु स्पष्ट कीजिए इन्हीं सूचनाओं के बाद गद्यांश में किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम होने का परिणाम दिया गया है। उत्तर में मूल सुविधाएँ पहले बतानी चाहिए और उनके लाभ का संक्षिप्त उल्लेख बाद में किया जा सकता है। पाठ में ऐप से किसी बीमा दावे के तत्काल भुगतान अथवा निश्चित अधिक आय की बात नहीं है, इसलिए ऐसे अतिरिक्त दावे नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष किसान मोबाइल ऐप के माध्यम से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाओं की जानकारी और बाज़ार के दाम जान सकते हैं। इससे बिचौलियों पर उनकी निर्भरता कम हुई है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

1(vii). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को सफल बनाने में कौन-सी मुख्य चुनौतियाँ हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसी में दी गई सूचना और उसके प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- मुख्य कथन तथा सहायक उदाहरण में अंतर करके प्रश्न में पूछे गए बिंदु को पहचानना चाहिए।

चरण 1: पाठ में निर्णायक आधार पहचानिए तीसरे अनुच्छेद में चुनौतियों की स्पष्ट सूची है: डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति। डिजिटल साक्षरता कम होने से लोगों के लिए डिजिटल सेवाओं का उपयोग करना कठिन होता है। यह बाधा लोगों की तकनीक समझने और चलाने की क्षमता से संबंधित है।

चरण 2: पूछे गए बिंदु स्पष्ट कीजिए इंटरनेट की धीमी गति ऑनलाइन सेवाओं के सुचारु उपयोग में बाधा बनती है। बिजली की अनियमित आपूर्ति भी डिजिटल सुविधाओं की निरंतर उपलब्धता को प्रभावित करती है। इस प्रकार पाठ में उपयोगकर्ताओं के कौशल और आवश्यक आधारभूत सुविधाओं, दोनों से जुड़ी कठिनाइयाँ हैं। उत्तर में सुरक्षा या उपकरणों की कीमत जैसी अनुलिखित समस्या जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मुख्य चुनौतियाँ डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति हैं। इनसे डिजिटल सेवाओं का सुचारु तथा निरंतर उपयोग कठिन होता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाइए और पाठ में न दी गई बात उत्तर में न जोड़िए।

2. जीवन एक संग्राम है, मत समझो यह विश्राम है,
हर दिन नई चुनौती है, हर पल एक इम्तहान है।
सुख-दुख की इस बगिया में, फूलों के संग काँटे भी हैं,
जो साहस से चलना सीखे, वही असली विजेता है।
आँधियाँ आएँगी राहों में, बाधाएँ मिलेंगी हर मोड़ पर,
मन को डगमगाने मत देना, विश्वास रखो अपने ज़ोर पर।
हर असफलता एक सीख है, हर गिरना है एक सबक,
जो गिरकर फिर उठते हैं, वही होते हैं असल में मज़बूत।
जीवन का यथार्थ यही है, संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म,
कभी मत रुकना इस राह में, चलो निरंतर, यही है कर्म।
मंजिल मिलेगी निश्चित ही, अगर इरादे पक्के हों,
धैर्य और मेहनत का दीप जलाओ –
सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे।

[8 अंक]

2(i). जीवन को संग्राम क्यों कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) जीवन विश्राम का पर्याय है।
- (B) जीवन मुस्कान का अभिप्राय है।
- (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।
- (D) जीवन सफलता का पर्याय है।

सही उत्तर: (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।

हल:

अवधारणा:

- जीवन के संग्राम होने का अर्थ निरंतर चुनौतियों का सामना करना है।
- काव्यांश के शब्दों और विकल्पों के आशय का मिलान करके उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश का आधार पहचानें कवि कहता है कि हर दिन नई चुनौती और हर पल इम्तहान है। वह साहस से आगे बढ़ने वाले को ही असली विजेता मानता है। अतः जीवन में चुनौती और उसका सामना करने का साहस दोनों आवश्यक हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) विश्राम की बात करता है, जबकि पहली पंक्ति इसका निषेध करती है। विकल्प (B) केवल मुस्कान तक सीमित है और संघर्ष को व्यक्त नहीं करता। विकल्प (D) केवल सफलता बताता है, जबकि कविता में असफलता और बाधाएँ भी जीवन का हिस्सा हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है। इसलिए सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: संग्राम का आशय समझने के लिए चुनौती और साहस वाली पंक्तियों को एक साथ पढ़ें।

2(ii). 'सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे' से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) कामनाओं की पूर्ति
- (B) धन एवं वैभव की उपलब्धि
- (C) गंतव्य का मार्ग
- (D) लक्ष्यों की सिद्धि

सही उत्तर: (D) लक्ष्यों की सिद्धि

हल:

अवधारणा:

- पंख खुलना यहाँ सपनों के साकार होने का रूपक है।
- पंक्ति का अर्थ उसके पहले आए धैर्य, मेहनत और दृढ़ इरादों के संदर्भ में ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग से भाव समझें कवि पक्के इरादों से मंजिल मिलने की बात कहता है और धैर्य तथा मेहनत का दीप जलाने को प्रेरित करता है। इस क्रम में सपनों के पंख खुलने का अर्थ प्रयत्न के फलस्वरूप निर्धारित लक्ष्य प्राप्त होना है।

चरण 2: विकल्पों में सबसे सटीक अर्थ चुनें विकल्प (A) कामनाओं की सामान्य पूर्ति बताता है, जबकि यहाँ मेहनत से लक्ष्य पाने का विशिष्ट संदर्भ है। विकल्प (B) अर्थ को केवल धन और वैभव तक सीमित कर देता है। विकल्प (C) केवल मार्ग बताता है, मंजिल की प्राप्ति नहीं। विकल्प (D) लक्ष्य की वास्तविक सिद्धि व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D), लक्ष्यों की सिद्धि है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ वाले प्रश्न में निकट अर्थों में से वही चुनें जो पिछली पंक्तियों के प्रयत्न और मंजिल दोनों को समेटे।

2(iii). कविता के केंद्रीय भाव को दर्शाने वाला/वाले कथन है/हैं :

- I. संघर्ष ही जीवन है।
- II. आनंद ही जीवन है।
- III. शांति ही जीवन है।

[1 अंक]

- (A) केवल I
- (B) केवल II
- (C) केवल III
- (D) I और II दोनों

सही उत्तर: (A) केवल I

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरी कविता में बार-बार आने वाले प्रमुख विचार से पहचाना जाता है।
- कथनों को अलग-अलग परखने के बाद सही विकल्प का चयन करना चाहिए।

चरण 1: तीनों कथनों को परखें कविता में जीवन को संग्राम कहा गया है और संघर्ष को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। इसलिए कथन I सही है। सुख और दुख दोनों का उल्लेख होने से केवल आनंद को जीवन मानने वाला कथन II सही नहीं है। निरंतर चुनौतियों और कर्म की प्रेरणा के कारण कथन III भी केंद्रीय भाव नहीं बताता।

चरण 2: विकल्पों का निर्णय करें विकल्प (A) केवल सही कथन I को स्वीकार करता है। विकल्प (B) और (C) क्रमशः आनंद तथा शांति को मुख्य भाव मानते हैं। विकल्प (D) में सही कथन I के साथ असंगत कथन II भी शामिल है, इसलिए वह स्वीकार्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का केंद्रीय भाव संघर्ष ही जीवन है। सही विकल्प (A), केवल I है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय केवल एक सुखद शब्द नहीं, आरंभ से अंत तक दोहराए गए विचार को आधार बनाएँ।

2(iv). काव्यांश के अनुसार जीवन क्या है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर काव्यांश में दिए गए जीवन के स्वरूप से लेना है।
- संग्राम का आशय चुनौतियों और बाधाओं का साहसपूर्वक सामना करना है।

चरण 1: जीवन का स्वरूप पहचानें पहली पंक्ति में जीवन को संग्राम कहा गया है और उसे विश्राम समझने से मना किया गया है। आगे हर दिन नई चुनौती और हर पल इन्तहान बताकर इस विचार को स्पष्ट किया गया है।

चरण 2: उत्तर को प्रसंग से पुष्ट करें कवि सुख-दुख को फूलों और काँटों के समान साथ-साथ रखता है। जीवन में बाधाएँ आती हैं, इसलिए व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और निरंतर कर्म के साथ आगे बढ़ना चाहिए। यही भाव जीवन के संग्राम होने को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश के अनुसार जीवन एक संग्राम है, जिसमें सुख-दुख और चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: जीवन क्या है जैसे सीधे प्रश्न का उत्तर कविता की पहली पंक्ति से लेकर उसके आशय से पुष्ट करें।

2(v). कवि के अनुसार कौन-से व्यक्ति मज़बूत होते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मज़बूती का अर्थ यहाँ विपत्ति के बाद फिर प्रयत्न करने की मानसिक दृढ़ता है।
- व्यक्ति की पहचान कविता में बताए गए व्यवहार से करनी चाहिए, बाहरी बल से नहीं।

चरण 1: संबंधित पंक्तियों का अर्थ समझें कवि प्रत्येक असफलता को सीख और प्रत्येक गिरने को सबक मानता है। उसके अनुसार असफल होना अंतिम पराजय नहीं है; उस अनुभव से समझ विकसित करके अपनी कमियों को सुधारना संभव है। इसलिए गिरना व्यक्ति को हमेशा कमज़ोर सिद्ध नहीं करता।

चरण 2: मज़बूत व्यक्ति के गुण स्पष्ट करें जो व्यक्ति गिरने या असफल होने के बाद फिर उठ खड़े होते हैं और प्रयास जारी रखते हैं, वही असल में मज़बूत हैं। वे राह की आँधियों तथा बाधाओं से मन को डगमगाने नहीं देते। अपने सामर्थ्य पर विश्वास रखकर साहस, धैर्य और मेहनत से मंजिल की ओर बढ़ते हैं। यह उत्तर कविता के संघर्ष और निरंतर कर्म के संदेश पर आधारित है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार वे व्यक्ति मज़बूत होते हैं जो असफलता से सीखते हैं, गिरकर फिर उठते हैं और बाधाओं के बीच आत्मविश्वास, धैर्य तथा साहस से प्रयास जारी रखते हैं।

त्वरित सुझाव: मज़बूत व्यक्ति की पहचान बताने में गिरकर उठने और असफलता से सीखने, दोनों बातों को अवश्य जोड़ें।

2(vi). कवि ने जीवन का यथार्थ किन्हें माना है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन का यथार्थ कविता के प्रत्यक्ष कथन और उसके समग्र संदेश से स्पष्ट होता है।
- संघर्ष तथा निरंतर कर्म को धैर्य, मेहनत और दृढ़ निश्चय के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: कवि का प्रत्यक्ष कथन पहचानें कवि कहता है कि जीवन का यथार्थ संघर्ष है और संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म है। जीवन केवल विश्राम या सुख का नाम नहीं है; उसमें चुनौतियाँ, बाधाएँ और असफलताएँ भी आती हैं। इनसे बचकर रुक जाने के बजाय उनका सामना करना जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करना है।

चरण 2: निरंतर कर्म से संबंध समझें कवि इसी विचार के साथ राह में कभी न रुकने और निरंतर चलते रहने को कर्म मानता है। असफलता से सीखना, अपने बल पर विश्वास रखना और धैर्य तथा मेहनत के साथ आगे बढ़ना इसी जीवन-दृष्टि के अंग हैं। दृढ़ इरादों से मंजिल पाने की प्रेरणा संघर्ष और कर्म का महत्त्व स्पष्ट करती है। अतः उत्तर को केवल कठिनाइयों की सूची तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने संघर्ष को जीवन का यथार्थ और सबसे बड़ा धर्म माना है। बाधाओं के बीच रुके बिना धैर्य, मेहनत तथा दृढ़ विश्वास के साथ निरंतर कर्म करना ही उसका संदेश है।

त्वरित सुझाव: यथार्थ के उत्तर में संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म वाली पंक्ति और निरंतर कर्म की प्रेरणा को साथ रखें।

3(i). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और विचार सहज भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। शीर्षक के अनुरूप आरंभ, विचारों का क्रमिक विकास और सार्थक समापन आवश्यक हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय के प्रमुख पक्षों का संतुलित विवेचन करें। भाषा मौलिक और प्रवाहपूर्ण हो तथा प्रत्येक वाक्य केंद्रीय विचार को आगे बढ़ाए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करना मोबाइल की सूचना से शुरू होने वाली सुबह का दृश्य लें। फिर संपर्क, सूचना और प्रतिभा के अवसरों की चर्चा करें। इसके बाद आभासी निकटता के बीच वास्तविक संबंधों की दूरी, तुलना और समय के नुकसान को दिखाएँ। अंत में विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश दें। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, विषय और संबोधन नहीं लिखे जाते। शीर्षक संक्षिप्त रखें और विचारों को सुसंगत अनुच्छेद में विकसित करें। अनावश्यक आँकड़ों और विषय से असंबद्ध प्रसंगों से बचें।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल की घंटी हमें दुनिया से जोड़ देती है। चाय ठंडी होती रहती है, पर संदेशों का सिलसिला नहीं थमता। सोशल मीडिया ने दूर बैठे अपनों को पास लाया है। सूचना, शिक्षा और अपनी प्रतिभा दिखाने के नए अवसर भी दिए हैं। किंतु इसी चमकती स्क्रीन ने पास बैठे लोगों के बीच अदृश्य दीवार खड़ी कर दी है। दूसरों की सजाई हुई जिंदगी देखकर हम अपनी खुशियाँ छोटी समझने लगते हैं। हर क्षण मिलने वाली प्रतिक्रियाओं की चाह समय और मन की शांति छीनती है। आवश्यकता है कि हम इसके स्वामी बनें, गुलाम नहीं। कुछ समय मोबाइल से दूर रहकर परिवार, पुस्तक और प्रकृति के साथ बिताएँ। दुनिया से जुड़ना तभी सार्थक है, जब स्वयं से हमारा संबंध बना रहे।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में विषय के मुख्य पक्षों को एक क्रम में विकसित करते हुए अंत में जिम्मेदार आचरण का संदेश दिया गया है। आरंभ का चित्र, बीच के उदाहरण और समापन एक ही केंद्रीय विचार से जुड़े हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर स्क्रीन और वास्तविक जीवन का एक ठोस दृश्य चुनें; लाभ तथा हानि लिखकर अंत में समयबद्ध उपयोग का व्यावहारिक सुझाव दें।

3(ii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

भारत की युवा शक्ति

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और विचार सहज भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। शीर्षक के अनुरूप आरंभ, विचारों का क्रमिक विकास और सार्थक समापन आवश्यक हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय के प्रमुख पक्षों का संतुलित विवेचन करें। भाषा मौलिक और प्रवाहपूर्ण हो तथा प्रत्येक वाक्य केंद्रीय विचार को आगे बढ़ाए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करना युवाओं को नई सुबह की किरण के रूप में प्रस्तुत करके आरंभ करें। उनकी प्रतिभा और राष्ट्रनिर्माण में योगदान बताएँ। फिर शिक्षा, कौशल, अनुशासन और समान अवसर की आवश्यकता जोड़ें। अंतिम भाग में व्यक्तिगत जिम्मेदारी को देश के भविष्य से जोड़ें। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, विषय और संबोधन नहीं लिखे जाते। शीर्षक संक्षिप्त रखें और विचारों को सुसंगत अनुच्छेद में विकसित करें। अनावश्यक आँकड़ों और विषय से असंबद्ध प्रसंगों से बचें।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख भारत की युवा शक्ति

भार की पहली किरण की तरह भारत का युवा नई संभावनाओं का संदेश लेकर आता है। उसके हाथों में श्रम है, आँखों में सपने हैं और मन में बदलाव का उत्साह। खेतों से प्रयोगशालाओं तक, खेल के मैदानों से उद्यमों तक उसकी प्रतिभा देश को आगे बढ़ाती है। किंतु केवल उत्साह पर्याप्त नहीं; सही शिक्षा, कौशल और अनुशासन भी आवश्यक हैं। बेरोजगारी, नशे और भ्रामक सूचनाओं से बचकर युवाओं को अपनी ऊर्जा रचनात्मक कामों में लगानी होगी। समाज भी उन्हें समान अवसर और विश्वास दे। कोई बच्चा पढ़ाए, कोई नया आविष्कार करे, कोई पर्यावरण बचाए—हर छोटा प्रयास राष्ट्रनिर्माण है। जब युवा अधिकारों के साथ कर्तव्यों को पहचानेंगे, तब भारत का भविष्य केवल सपना नहीं, हमारे सामूहिक परिश्रम की उजली उपलब्धि बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में विषय के मुख्य पक्षों को एक क्रम में विकसित करते हुए अंत में जिम्मेदार आचरण का संदेश दिया गया है। आरंभ का चित्र, बीच के उदाहरण और समापन एक ही केंद्रीय विचार से जुड़े हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल युवाओं की प्रशंसा न लिखें; उनके योगदान के साथ कौशल, अनुशासन और समाजसेवा का कोई ठोस उदाहरण अवश्य जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का अनुभव, कल्पना और विचारों के सहारे मौलिक तथा प्रभावपूर्ण विस्तार किया जाता है।
- आधुनिक जीवन-शैली के लाभ और चुनौतियाँ दिखाते हुए मानवीय संबंधों, स्वास्थ्य तथा संतुलन की आवश्यकता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: लेख का स्वरूप और केंद्रीय विचार विषय के अनुरूप शीर्षक दिया जाएगा। भूमिका में बदलते दैनिक जीवन का चित्र होगा, मध्य भाग में तकनीक से मिली सुविधा और उससे उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन होगा तथा अंत में विवेकपूर्ण जीवन का संदेश आएगा। लेख को सूची के स्थान पर प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद में लिखना उपयुक्त है।

चरण 2: विषय-विस्तार की योजना मोबाइल, ऑनलाइन शिक्षा और घर बैठे खरीदारी जैसे परिचित उदाहरण विचार को ठोस बनाएँगे। इनके साथ कम होते पारिवारिक संवाद, घटते शारीरिक श्रम और प्रकृति से दूरी का उल्लेख संतुलित दृष्टि देगा। सुविधा का विरोध करने के बजाय उसके समझदारी से उपयोग की बात की जाएगी।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली

सुबह आँख खुलते ही अब खिड़की से आती धूप नहीं, मोबाइल की स्क्रीन हमारा स्वागत करती है। हमारी आधुनिक जीवन-शैली सचमुच

तेजी से बदल रही है। ऑनलाइन पढ़ाई, घर बैठे खरीदारी और डिजिटल भुगतान ने समय तथा श्रम बचाया है। दूर रहने वाले अपनों से बातचीत भी आसान हुई है। लेकिन सुविधाओं की इस दौड़ में हमारा शरीर कम चलता है और मन अधिक थकता है। भोजन की मेज पर बैठे लोग भी अपने फोन में खोए रहते हैं। बच्चों के खेल के मैदान छोटे और स्क्रीन के संसार बड़े हो गए हैं। हमें प्रगति का स्वागत करते हुए संतुलन सीखना होगा। नियमित व्यायाम, परिवार से संवाद और प्रकृति के साथ कुछ समय हमारी दिनचर्या का हिस्सा बनें। तकनीक तभी उपयोगी है, जब जीवन में अपनापन भी बना रहे।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में आधुनिक सुविधाओं, उनकी चुनौतियों तथा संतुलित जीवन की आवश्यकता को दैनिक अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक परिचित दृश्य से आरंभ करें और अंत में उसी विषय से जुड़ा स्पष्ट संदेश दें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा-शैली के स्तर पर काफी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो और टेलीविज़न के समाचार श्रोता या दर्शक को सुनकर तत्काल समझने होते हैं; वह प्रसारित वाक्य को अपनी सुविधा से दोबारा नहीं पढ़ सकता।
- प्रसारण की भाषा सरल, बोलचाल के निकट, स्पष्ट और सहज उच्चारण वाली होनी चाहिए।

चरण 1: माध्यम की प्रकृति समझें मुद्रित समाचार को पाठक रोककर या दोबारा पढ़ सकता है। रेडियो और टेलीविज़न में वाचन आगे बढ़ता रहता है। कठिन शब्द, लंबी वाक्य-रचना या अस्पष्ट संदर्भ आने पर श्रोता मूल बात खो सकता है और अगली सूचना भी ठीक से नहीं समझ पाता।

चरण 2: सावधानियों को कारण से जोड़ें छोटे वाक्य, परिचित शब्द और स्पष्ट उच्चारण तत्काल अर्थ ग्रहण करने में सहायक होते हैं। रेडियो में दृश्य उपलब्ध नहीं होता और टेलीविज़न में शब्दों का दृश्यों से मेल आवश्यक है। अतः भाषा ऐसी हो कि पहली बार सुनने में समाचार का आशय समझ आ जाए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो और टेलीविज़न के समाचार सुनते समय श्रोता उन्हें दोबारा पढ़ नहीं सकता। इसलिए भाषा सरल, स्पष्ट, बोलचाल की और वाक्य छोटे होने चाहिए। कठिन शब्द, अस्पष्ट उच्चारण और जटिल वाक्य तत्काल समझ में बाधा डालते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष समाचार का अर्थ पहली बार सुनते ही स्पष्ट हो, इसलिए प्रसारण की भाषा और प्रस्तुति में विशेष सावधानी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दोबारा पढ़ न सकने का कारण बताएँ, फिर सरल शब्दों और छोटे वाक्यों की आवश्यकता जोड़ें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

टी.वी. पर खबरों के प्रसारण के दौरान प्रयुक्त चरण 'लाइव' से आप क्या समझते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लाइव प्रसारण में घटना के घटित होने के समय ही घटनास्थल से उसकी सीधी जानकारी दर्शकों तक पहुँचती है।
- इस चरण में संवाददाता घटनास्थल की तत्काल स्थिति, उपलब्ध तथ्य और प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत करता है।

चरण 1: लाइव का अर्थ स्पष्ट करें लाइव का मूल आशय सीधा प्रसारण है। दर्शक स्टूडियो से जुड़े संवाददाता के माध्यम से घटनास्थल का वर्तमान दृश्य और विवरण पाता है। समाचार की किसी पहले से रिकॉर्ड की गई रिपोर्ट को बाद में दिखाना मात्र लाइव कहलाने का आधार नहीं है।

चरण 2: प्रसारण में उसकी भूमिका समझें संवाददाता घटनास्थल से ताज़ा गतिविधियाँ बताता है और उपलब्ध जानकारी के अनुसार समाचार में नए तथ्य जोड़ता है। स्टूडियो में बैठा समाचारवाचक उससे प्रश्न भी कर सकता है। इस प्रकार दर्शकों को घटना की तत्काल स्थिति का अनुभव और अद्यतन जानकारी मिलती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लाइव का अर्थ घटनास्थल से समाचार का सीधा प्रसारण है। संवाददाता घटना के घटित होने के समय ही वहाँ की ताज़ा स्थिति, दृश्य और जानकारी दर्शकों तक पहुँचाता है। वह स्टूडियो के समाचारवाचक से जुड़कर तत्काल विवरण भी देता है।

चरण 4: निष्कर्ष लाइव में घटनास्थल और दर्शक सीधे जुड़ते हैं तथा घटना की उसी समय की जानकारी प्रसारित होती है।

त्वरित सुझाव: लाइव की पहचान के लिए घटनास्थल, सीधा प्रसारण और उसी समय की जानकारी—इन तीन बातों को उत्तर में जोड़ें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली कौन-सी है ? इसके उपयोग पर प्रकाश डालिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तथ्यों को उनके महत्त्व के घटते क्रम में रखा जाता है।
- मुखड़ा मुख्य सूचना देता है; उसके बाद विवरण, पृष्ठभूमि और कम महत्त्वपूर्ण तथ्य आते हैं।

चरण 1: शैली की पहचान प्रश्न समाचार लेखन की सर्वाधिक प्रचलित शैली और उसके उपयोग के बारे में है। इसका नाम उल्टा पिरामिड शैली है। पिरामिड का चौड़ा ऊपरी भाग यहाँ मुख्य सूचना का संकेत है; इसलिए सबसे आवश्यक तथ्य पहले आते हैं।

चरण 2: उपयोग स्पष्ट करना इस क्रम से पाठक आरंभ पढ़कर ही मुख्य घटना जान लेता है। स्थान कम होने पर संपादक नीचे का कम आवश्यक विवरण हटा सकता है और समाचार का मुख्य आशय सुरक्षित रहता है। उत्तर में पहचान के साथ यही उपयोग जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले तथा कम महत्त्वपूर्ण विवरण बाद में आते हैं। इससे पाठक तुरंत मुख्य बात जानता है और संपादन में अंतिम अंश हटाने पर भी मूल सूचना सुरक्षित रहती है।

त्वरित सुझाव: उल्टा पिरामिड याद करते समय मुख्य सूचना पहले और सहायक विवरण बाद में रखें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
समाचार पत्र-पत्रिकाओं में कारोबार और अर्थजगत से जुड़ी खबरों को विशेष स्थान क्यों दिया जाता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता कारोबार, उद्योग, बाजार तथा अर्थव्यवस्था से संबंधित समाचार देती है।
- आर्थिक बदलावों का प्रभाव रोजगार, आमदनी, उपभोक्ता व्यय और लोगों के निर्णयों पर पड़ता है।

चरण 1: पाठक के जीवन से संबंध कारोबार और अर्थजगत की खबरें केवल व्यापारियों तक सीमित नहीं होतीं। कीमतों, रोजगार और आर्थिक नीतियों में बदलाव आम नागरिक की आजीविका तथा पारिवारिक बजट को प्रभावित करता है। इसलिए इनका व्यापक पाठक

वर्ग होता है।

चरण 2: विशेष स्थान का कारण पाठक इन खबरों से बाजार की स्थिति और आर्थिक परिवर्तनों को समझते हैं। ऐसी जानकारी बचत, निवेश, खरीदारी तथा व्यवसाय संबंधी निर्णय लेने में उपयोगी होती है। उत्तर का केंद्र इन्हीं खबरों की सार्वजनिक उपयोगिता होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कारोबार और अर्थजगत की घटनाएँ आम लोगों की आय, रोजगार, बचत और दैनिक खर्च को प्रभावित करती हैं। इन खबरों से पाठकों को बाजार, व्यापार तथा आर्थिक नीतियों की जानकारी मिलती है। उपयोगी आर्थिक निर्णय लेने में सहायक होने के कारण इन्हें विशेष स्थान दिया जाता है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय बाजार की सूचना को रोजगार, खर्च और पाठक के निर्णयों से जोड़िए।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों का अपना स्तंभ किसे और क्यों माना जाता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक के नाम पत्र समाचार पत्र-पत्रिका में पाठकों की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्तंभ है।
- यह पाठकों को अपनी प्रतिक्रिया, समस्या, विचार और सुझाव सार्वजनिक रूप से रखने का अवसर देता है।

चरण 1: स्तंभ की पहचान प्रश्न में पाठकों के अपने स्तंभ का नाम और उसे ऐसा मानने का कारण पूछा गया है। यह स्तंभ संपादक के नाम पत्र है। इसमें पाठक स्वयं पत्र भेजते हैं, इसलिए समाचार पत्र में उनकी आवाज को स्थान मिलता है।

चरण 2: पाठकीय भूमिका समझाना इस स्तंभ में प्रकाशित सामग्री द्वारा पाठक किसी खबर पर सहमति या असहमति व्यक्त कर सकते हैं। वे स्थानीय समस्याएँ उठाते हैं और सुझाव देते हैं। इस तरह पत्रिका और पाठक के बीच संवाद बनता है तथा पाठकीय भागीदारी बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के नाम पत्र को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है। इसमें पाठक समाचारों पर प्रतिक्रिया, अपने विचार, समस्याएँ तथा सुझाव प्रस्तुत करते हैं। यह उन्हें सार्वजनिक अभिव्यक्ति का अवसर देता है और समाचार पत्र-पत्रिका तथा पाठकों के बीच संवाद स्थापित करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्तंभ का स्पष्ट नाम देकर प्रतिक्रिया, समस्या और सुझाव की भूमिका बताइए।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विशेष के उद्देश्य और उसकी संरचना पर विचार करना क्यों आवश्यक है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक वर्णन कर सकता है, पर नाटक में कथा संवाद, अभिनय और मंचीय क्रिया से सामने आती है।
- हर दृश्य कथानक को आगे बढ़ाने, चरित्र खोलने या संघर्ष को प्रभावी बनाने का काम करता है।

चरण 1: उत्तर की दिशा प्रश्न का केंद्र दृश्य की उपयोगिता और उसकी मंचीय रचना है। उत्तर में बताना चाहिए कि दृश्य क्यों रखा गया है तथा पात्र, संवाद, स्थान और घटनाओं का क्रम उसके उद्देश्य को कैसे पूरा करते हैं। केवल कहानी के प्रसंगों को संवाद में बदलना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: उद्देश्य और संरचना का संबंध दृश्य का उद्देश्य उसकी आवश्यकता तय करता है और संरचना उसे साकार करती है। यदि कोई दृश्य पात्र या संघर्ष के बारे में कुछ नया नहीं बताता, तो वह कथा की गति रोक सकता है। दूसरी ओर, उपयोगी घटना भी असंगत संवादों

या बिखरे क्रम के कारण प्रभाव खो सकती है। इसलिए दृश्य के भीतर क्रिया की निरंतरता तथा पूर्ववर्ती और आगामी दृश्यों से उसका संबंध जाँचना आवश्यक है। नीचे दिया गया उत्तर इन्हीं बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

चरण 3: मॉडल उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय प्रत्येक दृश्य का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए, ताकि वह कथानक को आगे बढ़ाए, चरित्र को उभारे अथवा संघर्ष को तीव्र करे। उद्देश्य के अनुसार ही दृश्य के पात्र, संवाद, घटनाक्रम और मंचीय गतिविधियाँ चुनी जाती हैं। उसकी संरचना पर विचार करने से आरंभ, विकास और अंत में संगति रहती है तथा अगले दृश्य से स्वाभाविक संबंध बनता है। इससे अनावश्यक विवरण हटते हैं, मंचन संभव होता है और दर्शकों की रुचि तथा नाटकीय प्रभाव बना रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष दृश्य का स्पष्ट उद्देश्य और सुव्यवस्थित संरचना रूपांतरण को सुसंगत, मंचीय तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दृश्य का उद्देश्य बताएँ, फिर पात्र, संवाद और घटनाक्रम की संगति से उसे जोड़ें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

दृश्य साधनों की बहुतायत उपलब्धता से पूर्व समाज में रेडियो का क्या स्थान था ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो आवाज़ के माध्यम से सूचना, शिक्षा और मनोरंजन को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाता है।
- सुनने के लिए पढ़ना जानना आवश्यक नहीं होता; इसलिए उसकी पहुँच निरक्षर और दूरस्थ श्रोताओं तक भी होती है।

चरण 1: उत्तर की दिशा दृश्य माध्यमों के व्यापक प्रसार से पहले रेडियो के महत्त्व को उसके उपयोगों और पहुँच के आधार पर समझाना है। समाचार, मनोरंजन और शिक्षा के उदाहरणों के साथ यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि वह विभिन्न क्षेत्रों के श्रोताओं को सार्वजनिक जीवन से जोड़ता था।

चरण 2: माध्यम की पहुँच का महत्त्व रेडियो की भूमिका केवल कार्यक्रम सुनाने तक सीमित नहीं थी। सामयिक समाचार श्रोताओं को देश और दुनिया से जोड़ते थे, जबकि उपयोगी प्रसारण दैनिक जीवन में जानकारी देते थे। उसकी श्रव्य प्रकृति के कारण साक्षरता की बाधा कम होती थी। एक ही प्रसारण अनेक लोगों तक पहुँचकर साझा सार्वजनिक अनुभव बनाता था। इसलिए उत्तर में केवल मनोरंजन लिखना अधूरा होगा; सूचना, शिक्षा और सामाजिक चेतना का पक्ष भी रखना आवश्यक है।

चरण 3: मॉडल उत्तर दृश्य साधनों की व्यापक उपलब्धता से पहले रेडियो समाज में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का प्रमुख साधन था। लोग समाचारों, राष्ट्रीय घटनाओं, खेलों की कमेंट्री और मौसम की जानकारी के लिए उसे सुनते थे। गीत, नाटक तथा अन्य कार्यक्रम उनका मनोरंजन करते थे। कृषि, स्वास्थ्य और शैक्षिक प्रसारण उपयोगी ज्ञान देते थे। अपेक्षाकृत सस्ता और सुगम होने से रेडियो गाँवों तथा दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुँचा। निरक्षर लोग भी उसे सुन सकते थे। वह जनजागरण और सामाजिक जुड़ाव का प्रभावशाली माध्यम था।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो व्यापक पहुँच वाला जनसंचार माध्यम था, जो सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और जनजागरण की आवश्यकताएँ पूरी करता था।

त्वरित सुझाव: रेडियो का स्थान समझाते हुए उसकी सेवाओं के साथ ग्रामीण और निरक्षर श्रोताओं तक पहुँच अवश्य लिखें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से कौन-कौन से लाभ मिलते हैं ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय परिचित विचारों को दोहराने के बजाय स्वतंत्र चिंतन और कल्पना की माँग करते हैं।
- लेखन के लाभों में विचारों की मौलिकता, भाषा का विकास और अनुभवों को व्यवस्थित करना शामिल है।

चरण 1: उत्तर की योजना लगभग 80 शब्दों के उत्तर में मानसिक विकास, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास से संबंधित लाभों को जोड़ना है। विषय से बाहर जाने या एक ही लाभ को अलग शब्दों में दोहराने से बचना चाहिए।

चरण 2: लाभों को स्पष्ट करने की विधि कल्पनाशक्ति का विकास इसलिए होता है कि विषय का तैयार उत्तर सामने नहीं होता और लेखक को अपने अनुभवों से नए संबंध खोजने पड़ते हैं। मौलिक चिंतन का अर्थ केवल अनोखी बात कहना नहीं, बल्कि विषय को अपनी दृष्टि से समझना है। भाषा संबंधी लाभ बताते समय शब्द-चयन और विचारों के क्रम का उल्लेख करना उपयोगी है। आत्मविश्वास का संबंध अपनी बात स्वतंत्र रूप से कहने के अभ्यास से है। उत्तर में इन लाभों को एक-दूसरे से जोड़ने पर वह सूची जैसा नहीं लगता और विषय का समग्र बोध प्रस्तुत करता है। यह व्याख्या उत्तर की तैयारी के लिए है; नीचे दिया गया आदर्श उत्तर निर्धारित शब्द-सीमा के अनुरूप है।

चरण 3: आदर्श उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से हमारी कल्पनाशक्ति तथा मौलिक चिंतन का विकास होता है। हम परिचित बातों को भी नए दृष्टिकोण से देखना सीखते हैं। ऐसे विषय अनुभवों, स्मृतियों और ज्ञान को जोड़कर विचार बनाने का अवसर देते हैं। इससे विचारों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करने, उचित शब्द चुनने तथा भाषा का प्रभावपूर्ण प्रयोग करने का अभ्यास होता है। हमारी झिझक दूर होती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। यह लेखन जिज्ञासा, संवेदनशीलता और सृजनात्मक क्षमता को भी समृद्ध करता है।

चरण 4: निष्कर्ष नए विषयों पर लेखन कल्पना, मौलिक चिंतन, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास का विकास करता है।

त्वरित सुझाव: लाभ लिखते समय कल्पना, विचार, भाषा और आत्मविश्वास को उदाहरणरहित संक्षिप्त क्रम में जोड़ें।

6. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्योंकि इस करतब पर मुझे

साफ़ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हारकर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोंक दिया।

[5 अंक]

6(i). कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कॉलम-I	कॉलम-II
1. बात का पेंच खोलना	(i) बात का प्रभावहीन हो जाना
2. बात की चूड़ी मर जाना	(ii) बात में कसावट का न होना
3. पेंच को कील की तरह ठोंक देना	(iii) बात को सहज और स्पष्ट करना

[1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

सही उत्तर: (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पेंच और चूड़ी भाषा तथा अर्थ के संबंध को समझाने वाले प्रतीक हैं।
- प्रतीक का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित होता है; केवल यांत्रिक क्रिया का अर्थ लेना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: सही सुमेल का आधार बात का पेंच खोलने का अर्थ उलझन दूर करके बात को सहज और स्पष्ट करना है, इसलिए 1 का संबंध (iii) से है। ज़ोर लगने पर चूड़ी मरने से पेंच बेकार घूमता है; उसी प्रकार बात प्रभावहीन हो जाती है। अतः 2 का संबंध (i) से है। अंत में पेंच को कील की तरह ठोंकना उचित कसावट के अभाव में उसे बलपूर्वक स्थिर करना है; अतः 3 का संबंध (ii) से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) और (C) में पहले पद का अर्थ ही गलत है। (D) में पहला संबंध सही है, लेकिन दूसरे और तीसरे अर्थ उलट गए हैं। चूड़ी मरने का निर्णायक परिणाम बात का प्रभावहीन हो जाना है, जिसे काव्यांश में भाषा में बेकार घूमने से स्पष्ट किया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेल 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले पेंच खोलने को स्पष्टता से जोड़ें, फिर बेकार घूमने को प्रभावहीनता से मिलाएँ।

6(ii). कवि को किस बात का डर था ?

[1 अंक]

(A) कहीं बात बन न जाए

(B) कहीं बात और न बिगड़ जाए

(C) कहीं कोई बात न हो

(D) कहीं बात पकड़ में न आ जाए

सही उत्तर: (B) कहीं बात और न बिगड़ जाए

हल:

अवधारणा:

- कवि के डर को उसके बाद घटित परिणाम से पहचाना जा सकता है।
- काव्यांश में ज़ोर-ज़बरदस्ती से अभिव्यक्ति की सार्थकता नष्ट होने की स्थिति दिखाई गई है।

चरण 1: आशंका और परिणाम का संबंध कवि उलझन को धैर्य से समझने के बजाय पेंच कसता जा रहा था। उसे डर था कि इस अनुचित प्रयास से बात और बिगड़ जाएगी। आगे बात की चूड़ी मरने और भाषा में उसके बेकार घूमने का उल्लेख इसी डर के सच होने को व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में बात बनने का आशय सफलता है, जबकि कवि की आशंका बिगड़ने की है। (C) का कोई बात न होना प्रसंग से मेल नहीं खाता, क्योंकि बात पहले से मौजूद है। (D) में पकड़ में न आने का भाव है, लेकिन यहाँ मुख्य आशंका लगातार जोर लगाने से उसे और खराब कर देने की है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि को डर था कि कहीं बात और न बिगड़ जाए। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: डर वाले प्रश्न में अगली पंक्तियों का परिणाम पढ़कर देखें कि कौन-सी आशंका सच हुई।

6(iii). 'इस करतब' के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) बात को सहज और सरल बना देने की ओर
- (B) अपने भाषिक ज्ञान और कौशल की ओर
- (C) श्रोताओं से मिल रही प्रशंसा की ओर
- (D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर

सही उत्तर: (D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर

हल:

अवधारणा:

- संकेतवाची पद का अर्थ उसके ठीक पहले वर्णित क्रिया से खुलता है।
- काव्यांश भाषा के प्रदर्शन और सहज संप्रेषण में अंतर स्पष्ट करता है।

चरण 1: करतब का प्रसंग इस करतब से पहले कवि कहता है कि वह पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसता चला जा रहा था। भाषा के संदर्भ में यह बात को सुलझाने के बजाय शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने का संकेत है। श्रोताओं की वाह-वाह इसी दिखावटी क्रिया को बढ़ावा देती है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर (A) उलटा अर्थ देता है, क्योंकि बात सरल नहीं हो रही थी। (B) भाषिक कौशल का सामान्य उल्लेख है, लेकिन यहाँ विशेष संकेत उसके अनुपयुक्त प्रदर्शन से पैदा जटिलता की ओर है। (C) में प्रशंसा उस करतब की प्रतिक्रिया है, स्वयं करतब नहीं। इसलिए (D) प्रसंग का सबसे सटीक अर्थ व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस करतब का संकेत बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: इस या उस जैसे संकेतवाची शब्दों के लिए पिछली क्रिया पढ़ें और प्रतिक्रिया से उसका भेद करें।

6(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : बात का सही शब्द से जुड़ना ही सहज भावाभिव्यक्ति है।

कारण : प्रत्येक अभिव्यक्ति के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, अतः भाषा के प्रयोग में चमत्कार प्रदर्शन से परे अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(D) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- सहज अभिव्यक्ति में भाव और उपयुक्त शब्द का सही मेल आवश्यक होता है।
- कथन-कारण में दोनों की सत्यता के साथ उनके व्याख्यात्मक संबंध को भी परखना चाहिए।

चरण 1: कथन की जाँच कथन सही है। भाव के अनुकूल शब्द मिलने पर बात सहज रूप में संप्रेषित होती है। काव्यांश में भाषा को बलपूर्वक मोड़ने से बात का प्रभाव नष्ट होता है; इससे उचित शब्द और भाव के मेल की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

चरण 2: कारण की जाँच कारण भी सही है। यहाँ खास शब्द नियत होने का आशय अभिव्यक्ति के लिए प्रसंगानुकूल और सटीक शब्दों की आवश्यकता से है। केवल चमत्कार दिखाने के लिए शब्दों का प्रयोग करने से मूल बात उलझ सकती है, इसलिए भाषा के चयन में सावधानी अपेक्षित है।

चरण 3: व्याख्या के संबंध की जाँच कारण बताता है कि सही शब्द से बात को जोड़ना क्यों आवश्यक है। अनुपयुक्त शब्दों और प्रदर्शन से बचना ही सहज अभिव्यक्ति बनाए रखता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) दोनों को गलत कहता है, (B) कारण को गलत और (D) संबंध को अस्वीकार करता है; ये तीनों निर्णय प्रसंग के विरुद्ध हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों को अलग परखें, फिर देखें कि कारण सही शब्द के चयन की आवश्यकता समझाता है या नहीं।

6(v). तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में कौन-सा भाव है ?

[1 अंक]

- (A) आक्रोश का
(B) व्यंग्य का
(C) प्रशंसा का
(D) समानता का

सही उत्तर: (B) व्यंग्य का

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में किसी व्यवहार की अनुचित स्थिति को उजागर करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग हो सकता है।
- शब्दों का बाहरी अर्थ और प्रसंग में उनका निहित भाव अलग हो सकते हैं।

चरण 1: वाह-वाही का निहित भाव तमाशबीन कवि की उस भाषिक क्रिया की शाबाशी देते हैं जिससे बात सुलझने के बजाय और उलझ रही है। इसलिए उनकी वाह-वाही के उल्लेख में व्यंग्य है। कवि ऐसे दर्शकों और प्रदर्शनप्रियता की विडंबना सामने रखता है जो सार्थक अभिव्यक्ति के बजाय करतब से प्रभावित होते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का आक्रोश यहाँ मुख्य भाव नहीं है; पंक्तियाँ क्रोध की सीधी अभिव्यक्ति नहीं करतीं। (C) बाहरी शब्दार्थ के कारण आकर्षक है, लेकिन काव्यांश का आलोचनात्मक आशय साधारण प्रशंसा से आगे जाता है। (D) की समानता का कोई प्रसंग नहीं है। अनुचित करतब पर शाबाशी मिलने की विडंबना (B) को सही बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में व्यंग्य का भाव है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रशंसा के शब्द देखकर तुरंत उत्तर न चुनें; देखें कि जिस काम की प्रशंसा है वह सफल है या विडंबनापूर्ण।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘पतंग’ कविता में कवि ने बच्चों के कोमल और उल्लसित मन को किस प्रकार रेखांकित किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बच्चों की कल्पनाशीलता, उत्साह और निर्भयता का चित्रण हुआ है।
- प्रकृति के खुले वातावरण और पतंग उड़ाने की क्रिया से बालमन की स्वतंत्रता व्यक्त होती है।

चरण 1: कोमल कल्पना को समझिए कवि बच्चों के शरीर को कपास जैसा हलका बताकर उनकी कोमलता और कल्पनाशीलता उभारता है। रंगीन पतंगों के साथ उनकी इच्छाएँ भी आकाश की ऊँचाइयों तक जाती हैं। वे साधारण खेल में सुंदर, असीम संसार रच लेते हैं।

चरण 2: उल्लास के संकेत पहचानिए बच्चे सीटी बजाते, किलकारियाँ भरते और छतों पर दौड़ते हैं। उनका उत्साह इतना प्रबल है कि उन्हें ऊँचाई या गिरने का भय नहीं रहता। गिरकर भी वे सँभल जाते हैं और खेल में फिर लग जाते हैं। इससे उनका जीवन के प्रति सहज विश्वास प्रकट होता है। पतंग के साथ ऊपर उठता उनका मन सीमाओं को पार करना चाहता है। छतों की खतरनाक धार भी उन्हें रोक नहीं पाती। यहाँ बच्चों के खेल का बाहरी दृश्य उनके भीतर की सृजनशीलता का परिचायक बनता है। कविता में बाल्यावस्था की सहज सक्रियता और आनंद से भरा जीवन सामने आता है।

चरण 3: आदर्श उत्तर कवि ने बच्चों के शरीर को कपास जैसा हलका तथा उनके मन को उमंग और कल्पना से भरा बताया है। वे सीटी बजाते, किलकारियाँ भरते और छतों पर दौड़कर पतंग उड़ाते हैं। आकाश की ऊँचाइयाँ उन्हें आकर्षित करती हैं। गिरने का भय भी उनका उत्साह नहीं रोकता। उनकी कोमलता, निर्भयता और कल्पनाशीलता बालमन के उल्लास को सजीव बनाती है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों की कोमलता के साथ उनका उत्साह, कल्पनाशीलता और निर्भय जीवनविश्वास रेखांकित हुआ है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कपास जैसी कोमलता, किलकारियों का उल्लास और ऊँचाई से निर्भयता को जोड़िए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता में कवि ने ‘ऐ विप्लव के वीर !’ किसे और क्यों कहा है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के काव्य में बादल परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है।
- शोषित किसान बादल में नई शक्ति तथा शोषण से मुक्ति की आशा देखता है।

चरण 1: संबोधन का आशय कवि ने बादल को ऐ विप्लव के वीर ! कहा है। यहाँ विप्लव का अर्थ व्यापक सामाजिक परिवर्तन या क्रांति है। बादल की गर्जना और वर्षा में पुरानी जड़ व्यवस्था को झकझोरने तथा नया जीवन देने की शक्ति दिखाई गई है।

चरण 2: किसान की अपेक्षा स्पष्ट कीजिए शोषण से किसान का शरीर और जीवनशक्ति क्षीण हो गए हैं। वह बादल को अधीर होकर बुलाता है। वर्षा खेती को जीवन देती है; प्रतीकात्मक स्तर पर क्रांति पीड़ितों को शक्ति देती है। इसलिए बादल से उसका संबंध आशा

और मुक्ति का है। बादल केवल प्राकृतिक वर्षा का साधन नहीं है। कविता में प्रकृति का यह रूप सामाजिक अर्थ भी ग्रहण करता है। एक ओर उससे शोषक वर्ग भयभीत होता है, दूसरी ओर अभावग्रस्त किसान उसका स्वागत करता है। इस विरोध से स्पष्ट होता है कि कवि का समर्थन पीड़ित जन और उनकी मुक्ति की आकांक्षा के साथ है।

चरण 3: आदर्श उत्तर कवि ने बादल को ऐ विप्लव के वीर ! कहा है, क्योंकि वह क्रांति और नवजीवन का प्रतीक है। उसकी गर्जना शोषक व्यवस्था को चुनौती देती है और वर्षा धरती को जीवन देती है। शोषण से जर्जर किसान उसे अधीर होकर बुलाता है। उसे आशा है कि बादल रूपी क्रांतिवीर उसका दुःख दूर करके नया जीवन और शक्ति देगा।

चरण 4: निष्कर्ष बादल को परिवर्तनकारी शक्ति तथा पीड़ित किसान के उद्धार की आशा के कारण यह संबोधन मिला है।

त्वरित सुझाव: पहले संबोधित बादल का नाम लिखिए, फिर क्रांति के प्रतीक और किसान की आशा का संबंध समझाइए।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘छोटा मेरा खेत’ कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान का अभेद स्थापित करके अर्थ प्रकट किया जाता है।
- कवि ने काव्य-रचना की प्रक्रिया को खेत में फसल उगने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है।

चरण 1: रूपक के आधार पहचानिए कागज़ का पन्ना छोटा खेत है। किसी भावनात्मक आवेग से विचार का बीज उसमें पड़ता है। कल्पना उस बीज को विकसित करती है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। इस प्रकार खेती के माध्यम से कविता बनने की प्रक्रिया दिखाई गई है।

चरण 2: काव्य की विशेष फसल समझिए शब्दों का विकास कविता की फसल बनता है। सामान्य फसल कटने पर समाप्त होती है, पर कविता का रस बार-बार पढ़ने पर भी मिलता रहता है। पाठक उसमें आनंद पाते हैं और उसका सौंदर्य नष्ट नहीं होता। यही इस रूपक की विशेषता है। कवि का निजी अनुभव कल्पना और भाषा से सँवरकर सबके लिए आनंद का स्रोत बन जाता है। इसीलिए फसल का रूपक केवल रचना बनने तक सीमित नहीं रहता, वह पाठकों को मिलने वाले आनंद को भी समेटता है। काव्य की उपलब्धि उसका स्थायी और बार-बार अनुभव किया जा सकने वाला रस है।

चरण 3: आदर्श उत्तर कवि ने कागज़ के पन्ने को छोटा खेत कहा है। भावनात्मक आँधी से उसमें विचार का बीज पड़ता है। कल्पना के सहारे शब्दों के अंकुर और पल्लव निकलते हैं तथा कविता की रसपूर्ण फसल तैयार होती है। यह साधारण खेती से भिन्न है; पाठक जितना इसका आनंद लेते हैं, इसका रस समाप्त नहीं होता। इस प्रकार काव्य-सृजन का रूपक प्रस्तुत हुआ है।

चरण 4: निष्कर्ष कागज़, विचार, कल्पना और शब्दों को खेत, बीज, विकास और फसल से जोड़कर कविता की अक्षय रसवत्ता समझाई गई है।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते समय केवल कागज़ को खेत न कहें; बीज से रसपूर्ण फसल तक की प्रक्रिया भी जोड़ें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘दिन जल्दी-जल्दी ढलता है’ कविता में कवि ने यह क्यों कहा है – ‘मैं होऊँ किसके हित चंचल’ ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रिय की प्रतीक्षा जीवन को गति देने वाली प्रेरणा है।
- पक्षियों की घर लौटने की आतुरता और कवि की उदासी का अंतर भाव स्पष्ट करता है।

चरण 1: पक्षियों की गति से तुलना पक्षियों के बच्चे नीड़ों में उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए दिन ढलने पर पक्षियों के पंखों में चंचलता और घर पहुँचने की आतुरता भर जाती है। प्रियजनों से मिलने की आशा उन्हें गति देती है।

चरण 2: कवि की मनःस्थिति और आदर्श उत्तर कवि को लगता है कि उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई प्रिय नहीं है। इसलिए उसके मन में प्रश्न उठता है कि वह किसके लिए व्याकुल होकर शीघ्र चले।

कवि अकेलापन अनुभव करता है। पक्षियों के बच्चे उनकी प्रतीक्षा करते हैं, इसलिए वे तेजी से लौटते हैं। कवि की प्रतीक्षा करने वाला कोई प्रिय नहीं है। मिलने की आशा के अभाव में उसका उत्साह घट जाता है और उसके कदम शिथिल पड़ जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिय की प्रतीक्षा और मिलन की प्रेरणा के अभाव में कवि अपनी चंचलता को निरर्थक समझता है।

त्वरित सुझाव: कवि की पंक्ति को पक्षियों के बच्चों की प्रतीक्षा से जोड़कर अकेलेपन और शिथिल गति का कारण लिखिए।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘सूर्योदय के साथ कौन-सा जादू टूट जाता है ? ‘उषा’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में सूर्योदय से पहले के आकाश का सौंदर्य घरेलू और चित्रात्मक उपमानों के माध्यम से व्यक्त हुआ है।
- प्रश्न का आशय जादू के वास्तविक खेल से नहीं, उषाकाल के क्षणिक रंगों और उनके सम्मोहन से है।

चरण 1: कविता के बिंब पहचानना कवि ने प्रातःकालीन नभ के बदलते रंगों को नीले शंख, राख से लीपे चौके तथा केसर से रंगी सिल जैसे बिंबों में देखा है। ये उपमान अँधेरे के धीरे-धीरे हटने और प्रकाश के फैलने से बनते हैं। इनके कारण प्रकृति चित्रकार की रचना जैसी आकर्षक और रहस्यमयी लगती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सूर्योदय के साथ उषा के रंग-बिरंगे, रहस्यमय सौंदर्य का जादू टूट जाता है। अँधेरे और उजाले के मेल से आकाश में बनते मोहक दृश्य विलीन हो जाते हैं। सूर्य के स्पष्ट प्रकाश में आकाश का वह क्षण-क्षण बदलता सम्मोहन समाप्त हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह जादू उषाकालीन आकाश की रंगमयी, सम्मोहक छटा का है, जो सूर्योदय पर समाप्त हो जाती है।

त्वरित सुझाव: जादू का अर्थ बताकर उषा और पूर्ण सूर्योदय के दृश्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है, बालक तो हई चाँद पै ललचाया है’ – पंक्ति में बाल मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन हुआ है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाइयों में घरेलू जीवन के सहज प्रसंगों से माँ और बच्चे के आत्मीय संबंध उभरते हैं।
- बाल मनोविज्ञान के उत्तर में बच्चे की इच्छा, उसके व्यवहार और उसे समझाने के ढंग का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: बालक के व्यवहार का अर्थ बालक आँगन में ठुनक रहा है और चाँद पाने की ज़िद करता है। चाँद उसे आकर्षक वस्तु लगता है; उसकी दूरी और उसे पाने की असंभवता को वह नहीं समझता। अतः इस प्रसंग में बालक की सहज जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और हठ का परिचय मिलता है। माँ इसी बालसुलभ दृष्टि को समझकर दर्पण में चाँद दिखाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इन पंक्तियों में बालक की चंचलता, हठ और आकर्षक वस्तु पाने की तीव्र इच्छा व्यक्त हुई है। चाँद

को देखकर वह उसे खिलौने की तरह पाना चाहता है। वास्तविकता से अनजान उसका भोला, कल्पनाशील मन असंभव इच्छा पूरी कराने के लिए ज़िद करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति बालक की निश्छल कल्पनाशीलता और चाँद पाने के बालसुलभ हठ को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: ठुनकने को हठ से और चाँद की लालसा को भोली कल्पनाशीलता से जोड़िए।

9. शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना-इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन – धूप, वर्षा, आँधी, लू – अपने आप में सत्य नहीं हैं ? उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !

[5 अंक]

9(i). शिरीष का पेड़ लेखक में कौन-सी भावना जगा देता है ?

[1 अंक]

- (A) भ्रातृत्व की
- (B) सद्भाव की
- (C) अजेय मंत्र की
- (D) सौंदर्य बोध की

सही उत्तर: (C) अजेय मंत्र की

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आधार प्रतिकूल परिस्थितियों में शिरीष की सरसता और आंतरिक स्थिरता है।
- विकल्प का चयन गद्यांश के स्पष्ट संकेत से करना चाहिए; सामान्य रूप से अच्छा लगने वाला कथन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण लेखक के मन में ऊपर उठती तरंगें शिरीष की अजेय जिजीविषा से प्रेरित हैं। चिलचिलाती धूप में भी उसकी सरसता कठिनाइयों के सामने हार न मानने का संदेश देती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच भ्रातृत्व का अर्थ भाईचारा है और सद्भाव का अर्थ मेलभाव; यहाँ इन संबंधों की चर्चा नहीं है। सौंदर्य बोध एक गौण प्रभाव हो सकता है, पर गद्यांश का बल प्रतिकूलता में अविचल रहने पर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : अजेय मंत्र की।

त्वरित सुझाव: बाहरी कठिनाइयों के बीच शिरीष की भीतरी दृढ़ता को उत्तर का आधार बनाइए।

9(ii). 'क्या ये बाह्य ... अपने आप में सत्य नहीं हैं ?' प्रश्न के द्वारा लेखक ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) मौसम परिवर्तन की दार्शनिक व्याख्या की ओर
- (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर
- (C) प्राकृतिक आपदाओं से नहीं डरने की ओर
- (D) प्राकृतिक आपदाओं को स्वीकार करने की ओर

सही उत्तर: (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आधार प्रतिकूल परिस्थितियों में शिरीष की सरसता और आंतरिक स्थिरता है।
- विकल्प का चयन गद्यांश के स्पष्ट संकेत से करना चाहिए; सामान्य रूप से अच्छा लगने वाला कथन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण धूप, वर्षा, आँधी और लू वास्तविक बाहरी परिवर्तन हैं। लेखक इन्हें नकारता नहीं; वह पूछता है कि इनके बीच भीतर स्थिर कैसे रहा जा सकता है। प्रश्न बाहरी कठिनाइयों और आंतरिक दृढ़ता के संबंध की खोज करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच यह केवल मौसम परिवर्तन की दार्शनिक व्याख्या नहीं है। प्राकृतिक आपदाओं से न डरना और उन्हें स्वीकार करना सीमित अर्थ हैं; वे भीतर स्थिर रहने तथा जीवन के सत्य को समझने की जिज्ञासा को पूरा नहीं व्यक्त करते।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर।

त्वरित सुझाव: बाहरी कठिनाइयों के बीच शिरीष की भीतरी दृढ़ता को उत्तर का आधार बनाइए।

9(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए :

[1 अंक]

- (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।
- (B) 'शिरीष' प्रतिकूल परिस्थितियों में विचलित हो जाता है।
- (C) 'शिरीष' युद्ध की स्थिति में सहनशक्ति खो देता है।
- (D) 'शिरीष' विपरीत समय में हतोत्साहित हो जाता है।

सही उत्तर: (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आधार प्रतिकूल परिस्थितियों में शिरीष की सरसता और आंतरिक स्थिरता है।
- विकल्प का चयन गद्यांश के स्पष्ट संकेत से करना चाहिए; सामान्य रूप से अच्छा लगने वाला कथन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण गद्यांश में धूप, वर्षा, आँधी और लू के बीच शिरीष की सरसता तथा स्थिरता का उल्लेख है। इससे उसकी जीवित रहने की शक्ति और कठिन वातावरण में धैर्य बनाए रखने का भाव प्रकट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विचलित होना, सहनशक्ति खो देना और हतोत्साहित होना शिरीष के बताए स्वभाव के विपरीत हैं। युद्ध की स्थिति भी यहाँ नहीं दी गई है। शिरीष बाहरी परिवर्तन के बावजूद अपनी कोमलता और दृढ़ता बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : शिरीष जिजीविषा और कोलाहल के बीच धीरता का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: बाहरी कठिनाइयों के बीच शिरीष की भीतरी दृढ़ता को उत्तर का आधार बनाइए।

9(iv). गद्यांश में शिरीष, गांधी जी और अवधूत तीनों का उल्लेख हुआ है, तीनों में क्या समानता थी ?

[1 अंक]

- (A) तीनों ने अपना जीवन परोपकार में बिताया।
- (B) तीनों को समाज में लोकप्रियता प्राप्त थी।
- (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।
- (D) सभी ने सामाजिक जीवन का बहिष्कार किया।

सही उत्तर: (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आधार प्रतिकूल परिस्थितियों में शिरीष की सरसता और आंतरिक स्थिरता है।
- विकल्प का चयन गद्यांश के स्पष्ट संकेत से करना चाहिए; सामान्य रूप से अच्छा लगने वाला कथन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण लेखक शिरीष को अवधूत कहता है और गांधी जी को भी उसी आंतरिक शक्ति से जोड़ता है। वायुमंडल से रस खींचना परिस्थितियों में जीवनशक्ति पाने का संकेत है; कोमल और कठोर होना संवेदना के साथ दृढ़ता बनाए रखना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच परोपकार और लोकप्रियता को तीनों की समानता के रूप में गद्यांश स्थापित नहीं करता। सामाजिक जीवन के बहिष्कार की बात भी नहीं कही गई है। समानता प्रतिकूल वातावरण के बीच आंतरिक संतुलन बनाए रखने में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।

त्वरित सुझाव: बाहरी कठिनाइयों के बीच शिरीष की भीतरी दृढ़ता को उत्तर का आधार बनाइए।

9(v). गद्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्रेम का मोह से श्रेष्ठ होना
- (B) समानता का असमानता से श्रेष्ठ होना
- (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना
- (D) सत्य का असत्य भाव से श्रेष्ठ होना

सही उत्तर: (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आधार प्रतिकूल परिस्थितियों में शिरीष की सरसता और आंतरिक स्थिरता है।
- विकल्प का चयन गद्यांश के स्पष्ट संकेत से करना चाहिए; सामान्य रूप से अच्छा लगने वाला कथन पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण लेखक का प्रश्न है कि बाहरी परिवर्तनों के भीतर स्थिर कैसे रहा जा सकता है। शिरीष और गांधी जी के उदाहरण बताते हैं कि आंतरिक शक्ति से कठोर परिस्थितियों में भी संवेदना और दृढ़ता सुरक्षित रहती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच प्रेम और मोह, समानता और असमानता तथा सत्य और असत्य की आपसी तुलना गद्यांश का विषय नहीं है। यहाँ बाहरी आघात के सामने भीतर से मिलने वाली शक्ति को प्रमुखता दी गई है; इसी कारण आत्मबल वाला विकल्प उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना।

त्वरित सुझाव: बाहरी कठिनाइयों के बीच शिरीष की भीतरी दृढ़ता को उत्तर का आधार बनाइए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘चूड़ाकर्म’ से क्या अभिप्राय है ? अपने चूड़ाकर्म की उपयुक्तता सिद्ध करने के लिए भक्तिन ने शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका को दिया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में चूड़ाकर्म का अर्थ सिर के बाल मुँड़वाना है; इसे केवल बाल काटने या सजाने के अर्थ में नहीं लेना चाहिए।
- भक्तिन अपने व्यवहार की उचितता सिद्ध करने के लिए परंपरा और शास्त्र का सहारा लेती है।

चरण 1: प्रसंग को पहचानिए महादेवी वर्मा को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता था। भक्तिन अपना सिर मुँड़वाती थी और लेखिका के रोकने पर अपने व्यवहार के समर्थन में शास्त्र का प्रमाण देने लगी। इसलिए उत्तर में शब्द का अर्थ बताने के बाद उसके तर्क और लेखिका की प्रतिक्रिया का उल्लेख करना आवश्यक है।

चरण 2: भक्तिन का तर्क समझिए भक्तिन ने “तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध कहकर सिर मुँड़ाने को शास्त्रसम्मत ठहराया। यह सूत्र किस शास्त्र में है, लेखिका के लिए इसका पता लगाना संभव नहीं था। भक्तिन ने अपने विश्वास के अनुकूल प्रमाण देकर विवाद समाप्त कर दिया और उसका नियमित चूड़ाकर्म चलता रहा।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर चूड़ाकर्म से यहाँ अभिप्राय सिर के बाल मुँड़वाने से है। लेखिका को स्त्रियों का सिर घुटाना पसंद नहीं था। भक्तिन ने इसे उचित सिद्ध करने के लिए शास्त्र का हवाला देकर “तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध कहा। यह किस शास्त्र का कथन है, लेखिका जान नहीं सकी और मौन हो गई। इस प्रकार भक्तिन का प्रत्येक बृहस्पतिवार चूड़ाकर्म चलता रहा।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन ने शास्त्र का सुविधानुकूल तर्क देकर अपने सिर मुँड़ाने की प्रथा जारी रखी।

त्वरित सुझाव: पहले चूड़ाकर्म का अर्थ दें, फिर भक्तिन का सूत्र और लेखिका का मौन जोड़ें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“सूखे के समय इंदर सेना पर पानी डालना कहाँ तक सही है ?” – ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ से उद्धृत इस पंक्ति के संदर्भ में लिखिए कि जीजी ने लेखक के मन की दुविधा का समाधान किस प्रकार किया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक का संदेह सूखे में बचाकर रखे पानी के खर्च होने से जुड़ा है।
- जीजी इंदर सेना को पानी देना इंद्र का अर्घ्य और भविष्य की वर्षा के लिए किया गया त्याग मानती हैं।

चरण 1: दुविधा का कारण समझिए लेखक को लगता था कि जब पानी की इतनी कमी है, तब बच्चों पर पानी डालना उसे व्यर्थ गँवाना है। जीजी के उत्तर को इसी आपत्ति के संदर्भ में समझना चाहिए। पाठ में उनकी बात लोकविश्वास और उदारता का तर्क है; उसे वर्षा का वैज्ञानिक नियम बताना ठीक नहीं होगा। इस दृष्टि से जीजी पानी देने में सामूहिक मंगल की कामना देखती हैं। उनका विश्वास है कि अपना थोड़ा-सा देकर सबके लिए अधिक पाने की आशा रखना उदारता है।

चरण 2: जीजी का उदाहरण स्पष्ट कीजिए जीजी ने कहा कि किसी वस्तु को पाने के लिए पहले कुछ देना पड़ता है। किसान अच्छी फसल के लिए अपने पास का बीज खेत में डालता है। वैसे ही पानी का अभाव होते हुए भी थोड़ा पानी अर्पित करना सच्चा त्याग है। वे इसे इंद्र को दिया गया अर्घ्य मानती हैं, जिससे वर्षा की आशा जुड़ी है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर जीजी ने समझाया कि इंदर सेना पर पानी डालना पानी की बरबादी नहीं, इंद्र को दिया गया अर्घ्य है। कुछ पाने के लिए पहले देना पड़ता है। जैसे किसान अधिक फसल पाने के लिए बीज बोता है, वैसे ही वर्षा की आशा में पानी दिया जाता है। अभाव में किया गया दान ही सच्चा त्याग है; इसी तर्क से उन्होंने दुविधा सुलझाई।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी ने अर्घ्य, बीज बोने और अभाव में त्याग के उदाहरण से लेखक को समझाया।

त्वरित सुझाव: जीजी के तर्क में अर्घ्य, किसान का बीज और अभाव में त्याग को क्रम से जोड़ें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ में श्रम विभाजन का आधार किसे और क्यों नहीं माना जा सकता ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन का आधार व्यक्ति की योग्यता, प्रशिक्षण और स्वाभाविक रुचि होना चाहिए।
- माता-पिता का सामाजिक स्तर किसी बच्चे की व्यक्तिगत क्षमता का प्रमाण नहीं होता।

चरण 1: अस्वीकार्य आधार पहचानिए आंबेडकर जन्म, जाति या माता-पिता के सामाजिक स्तर को श्रम-विभाजन का उचित आधार नहीं मानते। जाति-प्रथा में व्यक्ति की अपनी प्रतिभा और रुचि विकसित होने से पहले ही उसका व्यवसाय तय कर दिया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के लिए स्वतंत्र चुनाव की संभावना सीमित हो जाती है।

चरण 2: कारण स्पष्ट कीजिए व्यक्तियों की क्षमताएँ समान नहीं होतीं और वे केवल वंश से निर्धारित नहीं होतीं। उचित प्रशिक्षण और विकास से व्यक्ति अपनी जीविका का चुनाव कर सकता है। जन्म के अनुसार काम बाँध देने से उसे अरुचिकर कार्य करना पड़ सकता है; इससे व्यक्तिगत दक्षता और समाज की कार्यकुशलता दोनों प्रभावित होती हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन का आधार जन्म, जाति अथवा माता-पिता का सामाजिक स्तर नहीं माना जा सकता, क्योंकि इससे व्यक्ति की रुचि, योग्यता और प्रशिक्षित क्षमताओं की उपेक्षा होती है। जाति-प्रथा व्यक्ति का पेशा पहले ही निश्चित कर देती है और जीविका चुनने की स्वतंत्रता छीनती है। उचित आधार व्यक्ति की विकसित क्षमता और स्वाभाविक अभिरुचि होनी चाहिए, जिससे व्यक्तिगत तथा सामाजिक कार्यकुशलता बढ़े।

चरण 4: निष्कर्ष जन्माधारित सामाजिक स्तर उचित आधार नहीं है; श्रम-विभाजन योग्यता और रुचि के अनुसार होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अस्वीकार्य आधार के साथ उसका नुकसान और सही आधार भी अवश्य लिखें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ में ‘पैसा पावर है’ – लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पैसा वस्तुओं को खरीदने की क्षमता देता है, इसलिए उसे शक्ति के रूप में देखा गया है।
- धन का अभिमान व्यक्ति को अपनी जरूरत से अधिक खरीदने के लिए उकसा सकता है।

चरण 1: कथन का आशय समझिए लेखक बाज़ार में धन की क्रयशक्ति और मन पर उसके प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। जब में पैसा होने पर व्यक्ति को लगता है कि वह बाज़ार की वस्तुएँ प्राप्त कर सकता है। यह सामर्थ्य उसके भीतर अपनी आर्थिक ताकत दिखाने की इच्छा भी पैदा करता है। यहाँ शक्ति से आशय शारीरिक बल नहीं, आर्थिक सामर्थ्य है। लेखक का संकेत इस बात पर है कि पैसा होने का अहंकार जरूरत और लालच का भेद धुँधला कर देता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक ने पैसे को पावर इसलिए कहा है कि वह वस्तुएँ खरीदने की क्षमता देता है। धनवान व्यक्ति को अपनी क्रयशक्ति का अभिमान होता है और वह उसे दिखाना चाहता है। इसी कारण बाज़ार का आकर्षण उसे अनावश्यक खरीदारी के लिए उकसाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पैसा क्रयशक्ति देता है और उसका प्रदर्शन करने की इच्छा अनावश्यक खरीदारी बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: पावर का अर्थ क्रयशक्ति बताकर उसे धन के अभिमान और अनावश्यक खरीदारी से जोड़ें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के आधार पर लिखिए कि महामारी की त्रासदी झेल रहे लोगों पर ढोल की आवाज़ का क्या प्रभाव पड़ता था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में महामारी से उजड़े गाँव की निराशा और लुट्टन की ढोलक से मिलने वाली जीवनीशक्ति का संबंध समझना आवश्यक है।
- प्रश्न का केंद्र रोग का उपचार नहीं, भय और निराशा से जूझ रहे लोगों का मनोबल है।

चरण 1: प्रसंग और प्रभाव समझिए महामारी के कारण गाँव में मृत्यु का आतंक और सन्नाटा था। ऐसे समय में रात को बजती पहलवान की ढोलक लोगों को यह अनुभव कराती थी कि संघर्ष की शक्ति अभी बची हुई है। उसकी आवाज़ उनके भय को कुछ देर के लिए कम करती थी। इस प्रकार ढोलक संकट के सामने हार न मानने का संदेश देती थी।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से त्रस्त गाँवासियों को ढोल की आवाज़ संजीवनी जैसी लगती थी। वह भयावह सन्नाटे को तोड़ती, निराशा दूर करती और उनमें साहस भरती थी। मृत्यु के आतंक के बीच यह आवाज़ उन्हें विपत्ति का सामना करने तथा जीवन से जूझने की प्रेरणा देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोल की आवाज़ लोगों का मनोबल बढ़ाती और महामारी की त्रासदी के बीच जीवित रहने का साहस देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सन्नाटा, मृत्यु का भय और ढोलक से मिलने वाले जीवन-संघर्ष के साहस को जोड़कर लिखिए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन केवल सेविका नहीं, लेखिका के जीवन और व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली आत्मीय साथी है।
- प्रभाव समझाते समय भोजन और रहन-सहन के ठोस परिवर्तनों को सेवा, समर्पण और साथ से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: पाठ के आधार पहचानिए भक्तिन ने लेखिका की देखभाल में अत्यंत अधिकार और अपनापन दिखाया। अपने ग्रामीण भोजन और जीवन-व्यवहार को उसने लेखिका की दिनचर्या में स्थान दिलाया। लेखिका भी उसकी रुचियों को अपनाने लगीं। इससे दोनों के बीच सामान्य स्वामिनी-सेविका संबंध से गहरी आत्मीयता बनी।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन ने अपनी निष्ठा, सेवा और आत्मीयता से महादेवी वर्मा के जीवन को प्रभावित किया। उसने लेखिका को देहाती भोजन का अभ्यस्त बनाया और उनके रहन-सहन पर अपनी छाप छोड़ी। वह सुख-दुःख की साथी बनकर उनके जीवन का अभिन्न अंग हो गई।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन ने लेखिका के भोजन, जीवन-व्यवहार और भावनात्मक संसार पर अपनी आत्मीय छाप छोड़ी।

त्वरित सुझाव: केवल सेवा का उल्लेख न करें; देहाती भोजन अपनाने का उदाहरण देकर जीवन पर पड़े प्रभाव को स्पष्ट करें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“यशोधर बाबू दो भिन्न कालखंडों में जीवन निर्वहन कर रहे हैं।” – पक्ष या विपक्ष में तर्क सहित उत्तर दीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू पर किशनदा की पुरानी जीवन-दृष्टि का गहरा प्रभाव है, जबकि उनका परिवार आधुनिक जीवन-पद्धति अपना चुका है।
- कथन के पक्ष में उत्तर देते समय बाहरी वर्तमान और भीतर बसे पुराने संस्कारों के बीच टकराव के उदाहरण देने चाहिए।

चरण 1: कथन का पक्ष और तर्क चुनिए कथन के पक्ष में तर्क संगत हैं। यशोधर बाबू वर्तमान समय में नौकरी और पारिवारिक जीवन जीते हैं, किंतु उनकी मान्यताएँ पुराने परिवेश से बनी हैं। इसीलिए समृद्धि और आधुनिक सुविधा को वे परिवार के दूसरे सदस्यों की तरह सहज प्रसन्नता से स्वीकार नहीं कर पाते।

चरण 2: पाठ से उदाहरण जोड़िए किशनदा की सादगी और सामुदायिक जीवन के प्रति उनका आकर्षण बना रहता है। इसके विपरीत, घर में बच्चों की नई सोच, पत्नी का बदलता रहन-सहन और विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक समारोह उन्हें असहज करते हैं। उनका बार-बार संदेह करना इसी मानसिक दूरी को प्रकट करता है। वे परिवार से जुड़े हैं, पर उसके नए उत्सवों और तौर-तरीकों से पूरी तरह तादात्म्य नहीं बना पाते।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर मैं इस कथन के पक्ष में हूँ। यशोधर बाबू वर्तमान में रहते हुए भी मानसिक रूप से अपने पुराने परिवेश से जुड़े हैं। किशनदा की सादगी, अनुशासन और सामुदायिक जीवन के संस्कार उनके आदर्श हैं। दूसरी ओर उनकी पत्नी और बच्चे आधुनिक सुविधाओं तथा नई जीवन-शैली को सहज स्वीकार करते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव भी उन्हें अपना नहीं लगता। बच्चों की सोच और व्यवहार देखकर वे बार-बार असमंजस में पड़ते हैं। इस प्रकार उनका बाहरी जीवन आधुनिक परिवार के साथ चलता है, किंतु भीतर पुरानी मान्यताएँ सक्रिय रहती हैं। यही द्वंद्व उन्हें दो कालखंडों के बीच खड़ा कर देता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू का वर्तमान पारिवारिक जीवन और अतीत से संचालित मानसिक संसार दो भिन्न कालखंडों में जीने की स्थिति बनाते हैं।

त्रुटित सुझाव: कथन का पक्ष पहले स्पष्ट करें और किशनदा के संस्कार तथा परिवार के आधुनिक उत्सव का उदाहरण साथ दें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“‘जूझ’ कहानी लेखक के जीवन-संघर्ष की प्रेरक गाथा है।” इस गाथा के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ ‘जूझ’ शिक्षा प्राप्त करने और अपनी रचनात्मक पहचान बनाने के संघर्ष को व्यक्त करता है।
- उत्तर में पिता का विरोध, खेती की बाध्यता, पढ़ाई के लिए समझौता और अध्यापकों से मिली साहित्यिक प्रेरणा को क्रम से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: जीवन-संघर्ष के महत्त्वपूर्ण पक्ष लेखक के पिता पढ़ाई की उपयोगिता नहीं समझते और उससे खेत में काम करवाना चाहते हैं। लेखक अनुभव करता है कि शिक्षा ही उसे कठिन परिस्थितियों से निकलने का रास्ता दे सकती है। वह माँ की सहायता और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से दोबारा विद्यालय जाने का अवसर पाता है। इसके लिए खेती के काम भी निभाने पड़ते हैं। इस प्रकार संघर्ष केवल आर्थिक अभाव से नहीं, बल्कि शिक्षा के प्रति पारिवारिक दृष्टिकोण से भी है। यह भी ध्यान रहे कि लेखक की सफलता किसी अचानक मिले अवसर का परिणाम नहीं है। वह कठिन श्रम के बीच पढ़ाई की इच्छा बनाए रखता है और शिक्षक की कविता सुनकर केवल प्रभावित ही नहीं होता, अपनी कल्पना से नई कविता रचने का प्रयास भी करता है। यही सक्रिय प्रयत्न उसके व्यक्तित्व का केंद्रीय गुण है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘जूझ’ आनंद यादव के शिक्षा और आत्मनिर्माण के संघर्ष की प्रेरक गाथा है। पिता उन्हें

पढ़ाने के बजाय खेती में लगाना चाहते हैं। लेखक माँ और दत्ता जी राव की सहायता से पुनः विद्यालय पहुँचते हैं। उन्हें पढ़ाई के साथ खेत का काम भी करना पड़ता है। विद्यालय में पिछड़ जाने और सहपाठियों के उपहास के बावजूद वे हिम्मत नहीं हारते। शिक्षकों का प्रोत्साहन और सौदलगेकर की कविता पढ़ाने की शैली उनकी साहित्यिक प्रतिभा जगाती है। वे स्वयं कविता बनाने लगते हैं। यह गाथा बताती है कि दृढ़ लगन, परिश्रम और उचित मार्गदर्शन से प्रतिकूल परिस्थितियों को पार करके जीवन की दिशा बदली जा सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का संघर्ष शिक्षा पाने से आरंभ होकर काव्य-सृजन और आत्मविश्वास अर्जित करने तक पहुँचता है। इसी क्रम से 'जूझ' प्रेरक आत्मकथा बनती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को पिता का विरोध, दोबारा विद्यालय जाना और कविता की प्रेरणा—इन तीन पड़ावों में संगठित करें; केवल गरीबी का सामान्य वर्णन न करें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘कला की दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता समृद्ध थी।’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के पाठ में हड़प्पा सभ्यता की कलात्मक समृद्धि का प्रमाण उसके शिल्प, मूर्तियों और कलात्मक वस्तुओं से मिलता है।
- उत्तर में उत्खनन से मिली वस्तुओं के ठोस उदाहरण देकर उनकी सूक्ष्मता और सौंदर्यबोध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ से कलात्मक समृद्धि के प्रमाण चुनना काँसे की नर्तकी और दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति मूर्तिकला के उदाहरण हैं। मुहरों पर उकेरे पशु सूक्ष्म अंकन और शिल्प-कौशल बताते हैं। मिट्टी के बर्तन, मनके, आभूषण तथा खिलौने दैनिक जीवन में भी कला की उपस्थिति दिखाते हैं। इन वस्तुओं को केवल पुरानी चीजें कह देना पर्याप्त नहीं; उत्तर में उनसे प्रकट सौंदर्यप्रियता, बारीक कारीगरी और परिष्कृत रुचि का निष्कर्ष जोड़ना चाहिए। नगर-योजना उपयोगी पृष्ठभूमि है, पर प्रश्न का मुख्य केंद्र कलात्मक उपलब्धियाँ हैं। प्रमाणों की विविधता भी महत्वपूर्ण है। धातु, पत्थर और मिट्टी जैसी अलग सामग्रियों में बनी वस्तुएँ बताती हैं कि शिल्प की अनेक विधाएँ विकसित थीं। आभूषणों और मनकों का उल्लेख नागरिकों की सुरुचि से जोड़ना चाहिए। इससे उत्तर किसी एक मूर्ति के वर्णन तक सीमित नहीं रहता और सभ्यता की व्यापक कलात्मक उपलब्धि स्पष्ट होती है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘अतीत में दबे पाँव’ में हड़प्पा सभ्यता की कलात्मक समृद्धि अनेक पुरावशेषों से प्रकट होती है। काँसे की नर्तकी की मूर्ति तत्कालीन कलाकारों की सूक्ष्म दृष्टि और धातु-शिल्प के कौशल का प्रमाण है। दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति भी मूर्तिकला की उन्नति दिखाती है। मुहरों पर अंकित पशुओं की आकृतियाँ सुंदर और सजीव हैं। मिट्टी के कलात्मक बर्तन, खिलौने, मनके और आभूषण बताते हैं कि कला दैनिक जीवन से जुड़ी थी। छोटी वस्तुओं में भी बारीक कारीगरी दिखाई देती है। ये अवशेष सिद्ध करते हैं कि उस सभ्यता के लोगों में विकसित सौंदर्यबोध और कलात्मक रुचि थी तथा वे कुशल शिल्पकार थे।

चरण 3: निष्कर्ष मूर्तियों, मुहरों और उपयोगी वस्तुओं में दिखाई देने वाला उत्कृष्ट शिल्प हड़प्पा सभ्यता की कलात्मक समृद्धि का ठोस आधार है।

त्वरित सुझाव: कला संबंधी उत्तर में नर्तकी, नरेश की मूर्ति, मुहरों और आभूषण जैसे प्रमाण लिखें तथा प्रत्येक को शिल्प-कौशल या सौंदर्यबोध से जोड़ें।